P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III * Issue-XII*August-2016

प्रमुख हिन्दी महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में त्रिकोणात्मक प्रेम

रजनी रौथाण
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
हे0 न0 ब0 ग0 वि0 वि0,
श्रीनगर

सारांश

प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक जिन साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ है। उनमें उपन्यास साहित्य का विशिष्ट महत्व है। अनेक गम्भीर और बहुत से हल्के –फुल्के, रोचक साहित्य रूपों के विद्यमान होते हुए भी उपन्यास का अपना उतना ही महत्व है।

व्यक्ति ने अपना एकाकी जीवन त्याग कर परिवारिक जीवन अपनाया, तभी समाज का निर्माण हुआ और समाजिक भावना विकसित हुई । साहित्य पूर्णरूपेण समाज से प्रभावित होता है।साहित्य में समाजिक चेतना और रचनाकार का निजी व्यक्तित्व दोनों ही समन्वित होते है। महिला लेखिकाओं ने अपनी औपन्यासिक कृतियों में समाजिक दायित्वों का निर्वाह किया है। उन्होने एक ओर जहां समाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा, विशुद्ध रूप में मानवीय धरातल पर की है। वहीं दूसरी ओर पूर्व युगीन जर्जर रूढ़िगत मूल्यों का खुले रूप में बहिष्कार भी किया है।

साहित्य का उद्देश्य कोरा आनन्द प्रदान करना न होकर सांस्कृतिक तथा मानसिक दोनों धरातलों का परिष्कार करना होता है। और यह तभी सम्भव है, जब साहित्य वैयक्तिक कुंठाओं और भावनाओंका ही चित्र न होकर सम्पूर्ण समाज और जन–समुदाय की कथाओं, अभावों और संघर्षो को मुक्ति पथ तथा प्रगति–पथ की ओर ले जाने की राह सुझाए। महिला लेखिकाओं ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है।

मुख्य शब्द : त्रिकोणात्मक प्रेम, महिला लेखिकायें, उपन्यास, साहित्य, स्त्री व पुरूषों, त्रिकोणात्मक सम्बन्धों

प्रस्तावना

आधुनिक युग में देखने पर पता चलता हे कि हिन्दी उपन्यासों में जीवन का विस्तार अनेकानेक रूपों में प्राप्त होता है। यह मानव के टूटने, विखरने, और बनने की गाथा है। महिला उपन्यास लेखिकाओं ने समाज के सभी कोनों से देखा परखा है। इनके उपन्यासों में प्रेम का प्रसंग सभी जगह दर्शाया गया है। अधिकांश उपन्यास प्रेम की पृष्ठभूमि पर लिखें गये हैं प्रेम का एक ओर 'काम' से विछिन्न सम्बन्ध होता है, तो दूसरी ओर उसका उन्नयन भक्ति में माना जाता है। प्रेम जीवन का सर्वश्रेष्ठ आनन्द माना गया है। जीवन यदि फूल है तो प्रेम उसके सौरभ के समान है। महिला उपन्यास लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में बदलते सन्दर्भ में प्रेम के विविध रूपों, विविध रंगों एवं विविध ढंगों को रूपायित किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि विभिन्न स्त्री व पुरूषों के साथ प्रेमानुभूतियाँ भी भिन्न होती है। प्रेम पात्र के बदलते ही मानों प्रेम की एक रसता समाप्त हो जाती है और नया अनुभव, नवीन आनन्द की पुष्टि करते लगता है। इन लेखिकाओं ने यह भी दर्शाया है कि आज प्यार व्यक्ति से नही वैभव से किया जाता है। प्यार में वासना बढ़ती जा रही है, ओर कहीं–कहीं यह भी देखने में आता है कि व्यक्ति अपनी पुत्री पर भी वासना भरी दृष्टि डालने वाला है। पुनः प्रेम के क्षेत्र में व्यक्ति आज उदार भी हो उठा है और वह दूसरे के गर्भ को भी अपना नाम दे देने की स्थिति में पहुंच गया है। आज की नारी भी प्रेम के क्षेत्र में पूर्व युगीन नारी से कहीं आगे निकल चुकी है। वह प्रिय द्वारा उपेक्षित होकर आठ–आठ आँसू नहीं रोती, प्रत्युत किसी अन्य से प्रेम कर वह पूर्व प्रेमी को ईंट का जबाब पत्थर से देती है। एक पुरूष दो नारियाँ अथवा दो पुरूष एक नारी के त्रिकोणों का बाहुल्य आज दिखाई देता है और ऐसे त्रिकोणात्मक सम्बन्धों की परिणितियों का अधिक्य बढ़ता जा रहा है। इस तरह प्रेम 'त्रिकोणात्मक' प्रेम और उसे वैविध्य के सम्बन्ध में महिला लेखिकाओं ने कुछ अनोखे और महत्वपूर्ण तथ्यों का उद्घाटन अपनी औपन्सासियक कृतियों में किया है।

'प्रेम' प्रिय शब्द का भाववाचक रूप है। प्रिय का अर्थ होता तृप्तिकारक। उसके भाववाचक रूप का अर्थ है 'तुप्ति'। प्रेम रसायन के रचयिता श्री 'विश्वनाथ'

ने प्रेम का लक्षण देते हुए लिखा है– ''जीव में आत्मा का ही रूप जो रस है, वह जिस उपाधि का आश्रय लेकर श्रृंगार बनता है, वह उपाधि प्रेम है।

अर्थात प्रेम रसमय आत्मा के बर्हिविकास का साधन है। उसी का अंगभूत तत्व है।'' ''शांडिल्य ने 'योग–वियोग वृत्ति' को प्रेम कहा है।'' उन्होंने प्रेम को अन्तःकरण की वह वृत्ति माना है, जिससे वस्तु संयोगकाल में भी वियोग साधना रहें। आचार्य भरत ने द्रवावस्था को प्रेम बताया है। अभिनव गुप्ताचार्य ने गुप्त इच्छा विशेष को प्रेम कहा है। महाप्रभु चैतन्य के अनुसार 'साधनाभक्ति से रतिभाव का उदय होता है' और वही प्रगाढ़ प्रेम बन जाता है। 'सर डब्लू कैम्पल' ने 'प्रेम को जीवन का सर्वश्रेष्ठ आनन्द कहा है।' और 'लॉग फैलों'' ने ''आत्म सर्मपण को प्रेम का नाम दिया है। ''डॉ ह्यूगो'' की दृष्टि में जीवन फूल के समान है और प्रेम उसमें शहद के समान है।''

सूफी कवि 'जायसी' ने तो प्रेम का ऊँचा आदर्श प्रस्तुत किया है। पदमावत् महाकाव्य मे अनेक स्थलों पर उन्होंने प्रेम आदर्श को मूर्तकरने की चेष्टा ही है। 'जायसी' का प्रेम ही उसकी साधना का सर्वस्व है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि प्रेम की कसौटी पर कस जाने पर मनुष्य (मानव)कंचन के समान (सदृश) खरा हो जाता है। प्रेमोदय का आधार निश्चित करना बड़ा कठिन है। प्रेम का आधार सौन्दर्य है। लेकिन यही द्रष्टा की वैयक्तिक रूचि से सम्बद्ध है। सामान्यतः आलम्बन के प्रथम परिचय, रूप, श्रवण, चित्र–दर्शन और साहचर्य से इस भाव का उदय होता है। जायसी ने प्रेम के विषय में लिखा है कि '' प्रेम गगन से ऊँचा है, प्रेम का ध्रुव आकाश स्थित ध्रुव से भी ऊपर उदय होता है। जो दुःख और वियोग सहने के लिए तत्पर होता है। सिर देने के लिए सन्नद्ध होता है। वही प्रेम का अधिकारी है। '' इस पथ पर योगी, यति तपस्वी ही चल सकता है' प्रेम को विधि ने कठिन पहाड़ जैसा निर्मित किया है। जो सिर देकर चढ़ना चाहता है वही चढ़ सकत है। प्रेम पथ पर चलना सूली पर चलने के समान है। इसमें कोई पक्का चोर या मंशूर ही चढ़ सकता है।

''ज्ञान–दिष्टि सो जाइ पहूँचा, प्रेम अदिस्ट
गगन ते ऊँचा
ध्रुव ते ऊँचा प्रेम–ध्रुव ऊआ। सिर देई पाँव
देइ सो छूआ।''
''ओहि जाइ जो होई उदासी, जोगी, जती,
रूपी सन्यासी।
''प्रेम पहान कठिन विधि गढ़ा सो पे चढ़ै जो
सिर सौ चढ़ा।
पथ सूरि उठा अंकूरू, चोर चढ़ै कि चढ़
मंसूरु।''

आज के युग में अनेकानेक परिवर्तन के कारण प्रेम की धारणा और प्रेम का स्वरूप बदल चुका है। आज चातकवत प्रेम की कहानी बन चुका है। वासना के दंश ने प्रेम को विषमय बना दिया है। व्यक्ति के स्वार्थ की वृत्ति इतनी बढ़ चुकी है कि, मानव प्रेम की भावना भी विलुप्त होती जा रही है। प्रेम को साधने के लिये व्यक्ति आज छल, कपट, प्रपंच, षडयंत्र आदि का आश्रय ले रहा है।

रहा होगा कोई युग जब प्रेम 'हाट' में न बिकता रहा होगा, किन्तु आज प्रेम कासौदा होता हैं, प्रेम बिकता। प्रेम खरीद जाता है, नारी अपनी वासना की पूर्ति का साधन मान रहा है।

महिला लेखिकाओं ने प्रेम के विविध रूप, रंग और प्रेम की बदलती धारणाओं को अपनी औपन्यासिक कृतियों में व्यक्त किया है। उनमें कुछ आकर्षक है। कुछ वितृष्णा उत्पन्न करते हैं और हमें सोचने–विचारने के लिए विवश करते हैं।

वासना और प्रेम में अन्तर होता है। वासना शारीरिक आकर्षण का भाव है, उसका पर्याय भोग में है, जो क्षणिक होता है। प्रेम एक रस होता है। उधर '' फ्रायड'' जैसे विद्वानों ने वासना को ही प्रेम कहा है। 'काम' इन्द्रियशक्ति या वासना के लिए व्यवहार में लाया जाता है। पुरूष और स्त्री के बीच प्रेम का उदय एक मानसिक प्रक्रिया है। यह प्रेमोदय क्यों और कैसे होता है। यह निर्धारित करना कठिन होता है। अन्नयता प्रेम का मूल तत्व है, चातक भारतीय साहित्य में अनन्य प्रेम का प्रतीक माना गया है। चातकवत् प्रेम ही साध्वा माना जाता है। प्रेम विविध रूपों में व्यक्त होता है।

प्रेम के बिना मनुष्य, मनुष्य नही होता। जो सच्चे मन और दृढ़ निश्चय के साथ प्रेम का खेल खेलता है वह दोनों लोकों को सफल बना देता है। जो प्रेम–पथ पर अग्रसर नही होता उसका पृथ्वी पर आना व्यर्थ है, जो सच्चा प्रेम करता है, उसके लिए सोना–जागना सब बराबर हो जाता है। वह सर्वत्र अपने प्रिय को ही देखता है। सच्चा प्रेम वही है जो प्राणों के साथ जाता है। आदर्श एवं पवित्र प्रेम की साधना बडी कठिन है। इसमें अत्मा समर्पण करने से ही आनन्द की प्राप्ति होती है। वास्तव में प्रेमभाव अनिर्वचनीय है।

एक युग था जब प्रेमिका अपने प्रेमी के लिए त्यागामयी होती थी । वह प्रेमी के अतिरिक्त किसी दूसरे को गले लगाने के बदले, मृत्यु का वरण करना अधिक श्रेयकर समझती थी। आज के युग की प्रेमिकाएं धन से प्यार करती है, व्यक्ति से नहीं। इसीलिए प्रेम तौर प्रणय सम्बन्धों में द्वन्द्वता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। आज की प्रेमिकाएं प्यार किसी और से करती हैं, लेकिन विवाह किसी और से करती है।

महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में प्रेम का त्रिकोणीय स्वरूप उभर कर आया है। उषा प्रिम्बदा ने आज के नारी जीवन की विसंगतियेां को सोचा–समझा है। उनके उपन्यास पचपन खम्बे लाल दीवारें एक त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी है।

किसी युग में पति के प्रति समर्पित रहकर अपना जीवन बिता देना स्त्री की विवशता रहीं होगी, किन्तु आज परिस्थितियाँ बदल चुकी है। आज नारी कहती है जिसे प्यार किया जाय उसके प्रति समर्पित हुआ जाये, उसके गुण–अवगुण, उसकी क्षमता , अपने से कुछ ज्यादा हो, बराबर या अपने से कम के साथ समझौता हो सकता है, समर्पण या सौदा नहीं।

दो पुरूष एक नारी के जीवन को लेकर विभिन्न लेखिकाओं ने अपनी कलम चलाई है। मेरे संधिपत्र की नायिका शिखा के जीवन में दो पुरूष आते हैं। पहले पुरूष के रूप में उसक पति आता है। जिसकी पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। दूसरी पत्नी बनती है शिखा। उसके पति का जीवन सुखमय हो जाता है। शिखा उपने

पति की इच्छाओं की पूर्ति करती है। शिखा के पति की मृत्यु हो जाती है। दूसरे पुरूष के रूप में शिखा के जीवन में रत्नेश आता है। वह अपने आप को रत्नेश को समर्पित कर देती है। किन्तु विवाह नहीं करती। शिखा की दृष्टि में–मोहपाशों की कल्पना ही सुखद है, जो इससे मुक्त हो जाय, वह भाग्यशाली है ।

दो पुरूष और एक नारी का चित्रण शशिप्रभा शास्त्री के नावें उपन्यास में किया गया है। इस उपन्यास की नायिका मालती के जीवन में प्रथम पुरूष के रूप में उसके प्रेमी सोमजी आते है, जिनसे वह प्यार करती है। और अपने को समर्पित कर देती है। परन्तु सोमजी उससे विवाह नहीं करते। मालती के जीवन में दूसरे पुरूष के रूप में विजयेश का प्रवेश होता है , जिससे वह विवाह करती है, और अपना शेष जीवन उसके साथ व्यतीत करती है।

मेहरून्निसा परवेज का उपन्यास उसका घर की ऐलमा के जीवन में दो पुरूष आते हैं। प्रथम पुरूष से उसका विवाह हो जाता है। वह उसे तलाक दे देता है। क्यों कि ऐलामा को दमे की विमारी है। दूसरे पुरूष के रूप में आहूजा आता है। जो उससे प्यार का नाटक करता है और अपनी वासना की तृप्ति करता हैं ।

ऑखों की दहलीज उपन्यास में दो पुरूष , एक नारी का चित्रांकन हुआ है। उपन्यास की नायिका तानिया के जीवन में दो पुरूष आते हैं। पहला पुरूष आता हैं, शमीम है। जिससे वह विवाह कर लेती है। विवाहोपरान्त जावेद आता है। वह विवाहित है। उपन्यास की तालिमा और जावेद विवाहित है, किन्तु एक–दूसरे से प्यार करते हैं। दोनों सोचते हैं कि पहले मिल गये होते तो जिन्दगी कितनी हसीन होती।

उसके हिस्से की धूप एक त्रिकोणात्कम प्रेम कहानी हैं मनीषा आरम्भिक जीवन जितेन से विवाह करके व्यतीत करती है, फिर जितेन से तलाक लेकर मधुकर से पुनर्विवाह करती है। इसी बीच नैनीताल में उसकी भेंट पूर्व पति जितेन से होती है वहॉ उनके साथ होटल में जाकर वह यौनतृप्ति करती है। आगे चलकर उसे लगता है कि मधुकर से विवाह करके भी वह रिक्तता पूर्ति नहीं कर सकी है, तो वह रचनात्मक कार्य की और मुड़ जाती है।

चित्तकोबरा मृदुला गर्ग का बहुचर्चित उपन्यास रहा है। इस उपन्यास में मानो लेखिका ने कहना चाहा है कि – प्रेम जीवन को गहराई देता है। फैलाव भी देता है। उसे सकुचित भी करता है। इसमें यह प्रश्न भी उठाया गया है कि क्या विवाहिता नारी का पर पुरूष से लगाव अनुचित है और यह सत्य भी उद्घाटित किया गया है कि जब धरती के भीतर का लावा उबलने लगता है तो सीमाऍं उसे रोक नहीं पाती। यही स्थिति प्रेम की है। एक और प्रश्न खडा़ किया गया है कि क्या कोई नारी पति के प्रति समुचित न्याय कर सकती है उसकी उद्दाम जिज्ञासाओं का गला घोंटकर ही समाज के प्रति उत्तरदायी रह सकता है उपन्यास की नायिका मनु महेश की पत्नी है। किन्तु रिचर्ड से प्यार करती है। रिचर्ड एक निर्जीव वृक्ष की छाया की तरह है। कभी अपनी आवश्यकतानुसार मनु उसके तले बैठना पसन्द करती है। किन्तु इस बैठने में आत्मा का लगाव नहीं है। रिचर्ड के चले जाने पर उसकी स्मृतियॉ मात्र रह जाती है। मनु के पास।

एक पुरूष दो नारियों के प्रेम का चित्रण भी महिला उपन्यासकारों ने किया है। कोरजा उपन्यास में जमशेद ऐसा पात्र है, जो सौतेली मॉ और बेटी से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करता है। सौतेली मॉ और बेटी साथ एक ही पुरूष का सम्बन्ध नैतिक विवादों को जन्म देता है। रन्नों की मॉ को पता चलता है कि कि जमशेद का पाप रन्नों के पेट में पल रहा है। वह ईर्ष्या से भर उठती है। – एक जादू को दोनों ने एक साथ भोगा था। मॉ बेटी का रिश्ता कहॉ रह गया दोनों सौत हो गयीं थी, दाह से उसका तन–बदन जल गया। जमशेद कुछ समय बाद घर छोड़कर चला जाता है।

आज का पुरूष, प्रेम के सन्दर्भ में सन्तुलित हो उठा है, वह पत्नी को किसी –दूसरे से प्रेम करते देखकर क्रोध नहीं करता। उसे आक्रोश नहीं आता, वह घुटन और टूटन महसूस नही करता प्रत्युत उदारता दर्शाता है।

चित्तकोबरा उपन्यास की नायिका मनु नाच–गाने में भाग लेती है। नाटक के रिहर्सल के दौरान उसकी भेंट रिचर्ड से हो जाती है। मनु और रिचर्ड का यह परिचय प्रगाढ़ रूप धारण करता है। एक दिन भावावेश में मनु नैतिक वर्जनाओं को नकार देती है और उसका शारीरिक सम्बन्ध रिचर्ड से हो जाता है।

उसके हिस्से की धूप उपन्यास की मनीषा दो पुरूषों के बीच जीती है। एक को छोड़कर दूसरे को ग्रहण करती है। किन्तु दूसरे के साथ रहकर भी वह पूर्व पति की अंकशायिनी बनती है। मनीषा की मानसिक बनावट की प्रकृति क्या है पकड़ में नहीं आती। न तो वह स्वतन्त्रता पाकर प्रसन्न है और न अनुशासन में रह कर । नारी मन की भूल–भुलइया ही कुछ ऐसी होती है। गृहस्थ सुख से भरे लबालब प्याले को वह होठों से परे हटा देती है। जितेन का गृहस्थ जीवन वह धरशायी कर देती है। उधर मधुकर के घर की नींव भी वह मजबूत नहीं कर पाती है। शटल कॉक की तरह वह कभी जितेन तो कभी मधुकर की बाहों में टकराती है। मधुकर के साथ रहकर भी वह असन्तुष्ट होती है। उसकी यह दुविधा इन दोनों को खो देती है। प्रेम का ऐसा त्रिकोणात्मक संघर्ष गृहस्थ जीवन की ऐसी बहकी उलझी आकृतियॉ हिन्दी के किसी अन्य उपन्यास में नहीं दर्शायी गई हैं।

कान्ता भारती के उपन्यास रेती की मछली में पर पुरूष प्रेम का चित्रण किया गया है। पर पुरूष प्रेम की परिणिति यदि एक के लिए सुखद होती है तो दूसरे के लिए दुखद।

समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं, जो अपने घर के अतिरिक्त किसी एक प्रेमिका से सन्तुष्ट नहीं हो पाते। वे अपने सम्पर्क में आने वाली हर नारी की नाप लेने का प्रयत्न करते हैं। पूर्व काल से ही पुरूष विवाहित नारी के अतिरिक्त अन्य नारियों से भी शारीरिक सम्बन्ध बनाते आ रहा है। यह शारीरिक सम्बन्ध किसी नारी विशेष से स्थायी हो सकता है। तब उस नारी को रखैल की संज्ञा दी जाती है। पूर्व युग में ऐसी नारियों के खर्च का दायित्व भी पुरूष वहन करता था। किन्तु आज स्थिति यह है कि यदि ऐसी नारी नौकरी पेशा है तो उसे अपने विवाह के लिए खर्च की आवश्यकता नहीं होती। ऐसी भी

स्थितियाँ देखी गयी है। जबकि ऐसी नारी तो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न है पुरूष ही विपन्नता में है। तब अनेक स्थलो पर ऐसी नारी ही पुरूष को आर्थिक सहयोग देती है और तब सम्भवतया रखैल नारी नही, पुरूष बन जाता है। किन्तु आज की नारी मानसिक दृष्टि से इतने आगे बढ़ चुकी है कि वह रखैल शब्द पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगा रही है। वह आज इस शब्द के सिमित अर्थ को ही नही स्वीकारती, उसका कथन है–एक कैप्ट वुमन नामकी कोई चीज होती भी है। यूँ तो शादी के बाद औरत को बिना असली प्यार वाली जिन्दगी चलाते हुए वही कुछ बने रहना पडता है। जिस्म तो देना ही होता है तो फिर अलग से किसी को ''कैप्ट वुमन'' ही मुझे बड़े ही अनपढ़ एवं कूड़ दिमाग की बात लगती है।

महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक जीवन में त्रिकोणात्मक प्रेम एवं उसकी समस्याओं का चित्रांकन किया है प्रेम जब त्रिकोणीय हो जाता है तो पारिवारिक व्यवस्था बिगड जाती है। पति–पत्नी के बीच टकराहट, और तनाव बड जाता है। यहां तक कि तलाक तक हो जाता है। ऐसी अवस्था में बच्चों के भविष्य पर बुरा असर पडता है। और वे मानसिक यातना से गुजरते है। दाम्पत्य जीवन पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। स्त्री और पुरूष का पारस्परिक स्नेह एवं प्रेम ही दाम्पत्य जीवन में मृदु मुस्काने बिखेरता है। दाम्पत्य जीवन की कटुता सम्पूर्ण जीवन को विषमय बना देती है। वैदिक युग में दाम्पत्य जीवन की पवित्रता अक्षुण्ण थी। प्रिय का नेकटय (सामीप्य) प्रत्येक नारी को काम्य रहा है। प्रिय जहाँ पास होता है वही पत्नी को धूप और चाँदनी भी धूप बन बैठती है।

'' पिय निकट जाके, नही घाम चाँदनी ताहि।
पिय निकट जाके नही, घाम चाँदनी ताहि।''

इस प्रकार पति–पत्नी का आपसी प्रेम तथा एक–दूसरे के प्रति निष्ठता की भावना पारिवारिक सुख प्रदान करती है। जहाँ प्रेम का स्वरूप बदल जाता है। अर्थात पति–पत्नी के बीच 'वो' वाली स्थति आती है। तो वही प्रेम पारिवारिक दुःख, विघटन और कलह का कारण बन जाता है। जरूरी नही कि त्रिकोणात्मक प्रेम की परिणति दुःखात्मक ही होती है। कभी–कभी यह परिणति सुःखात्मक भी होती है। आधुनिक परिवेश में जीवन मूल्यों और आदर्शों के खण्डित होने के कारण सम्बन्धों में बिखराव आया है। पुरातन समय में जो सम्बन्ध प्रेम से रचे बसे थे और मर्यादा से बन्धे थे आज के परिवेश में वही भौतिकता से रचे बसे है। परिणामतः सम्बन्धों में बिखराव, पारिवारिक विघटन और पलायन होना स्वाभाविक है।

उद्देश्य

महिला उपन्यास लेखिकाओं ने त्रिकोणात्मक प्रेम के कारण जीवन की सभी दिशाओ का भ्रमण किया है। और उसके विविध रूपों का चित्रांकन किया है। महिला होने के नाते स्त्री वर्ग की कठिनाईयों को इन लेखिकाओ ने सहज, स्वाभविक रूप से पकडा है। और निः संकोच उसकी अभिव्यक्ति की है। आधुनिक परिभाषा के अनुसार प्रेम और विवाह दो विपरीत ध्रुवांत है। एक धुरी पर दोनो आरोहण आज की सोच के अनुसार सम्भव नहीं है। सुःखी दाम्पत्य जीवन की इन्द्रधनुषी छटा जहाँ उन्हे प्रभावित किया है। वही विभिन्न कारणों से नीरस बनते दाम्पत्य जीवन का चित्रण किया जाना भी उन्होने अपना कर्तव्य समझा है। यह तो सच है कि पति–पत्नी में परस्पर प्रेम, सहयोग, सफल दाम्पत्य जीवन का अनमोल, अटूट कोष है। इस के साथ ही स्वार्थ का त्याग, बहुजन सुखाय का सिद्धान्त स्वर्णिम जीवन का मूल मंत्र है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि महिला उपन्यास लेखिकाओं ने त्रिकोणात्मक प्रेम के कारण जीवन की सभी दिशाओ का भ्रमण किया है। और उसके विविध रूपों का चित्रांकन किया है। महिला होने के नाते स्त्री वर्ग की कठिनाईयों को इन लेखिकाओ ने सहज, स्वाभविक रूप से पकड़ा है। और निः संकोच उसकी अभिव्यक्ति की है। आधुनिक परिभाषा के अनुसार प्रेम और विवाह दो विपरीत ध्रुवांत है। एक धुरी पर दोनो आरोहण आज की सोच के अनुसार सम्भव नहीं है। सुःखी दाम्पत्य जीवन की इन्द्रधनुषी छटा जहाँ उन्हे प्रभावित किया है। वही विभिन्न कारणों से नीरस बनते दाम्पत्य जीवन का चित्रण किया जाना भी उन्होने अपना कर्तव्य समझा है। यह तो सच है कि पति–पत्नी में परस्पर प्रेम, सहयोग, सफल दाम्पत्य जीवन का अनमोल, अटूट कोष है। इस के साथ ही स्वार्थ का त्याग, बहुजन सुखाय का सिद्धान्त स्वर्णिम जीवन का मूल मंत्र है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है जिसे विभाजित नहीं किया जा सकता वास्तव में दो प्रेमियों के बीच यदि तीसरा आ जाय तो हदय में घृणा जन्म लेती है। यहाँ तक कि यही प्यार अपूर्ण रहने पर विद्रोह का रूप भी धारण कर लेता है। मेरे विचार से नर नारी का प्रेम कोई कच्ची मिटटी के घड़े के समान नही होना चहियें । जो क्षण भर में ही बिखरकर ही नष्ट हो जाय अपितु उसे तो विश्वास रूपी अग्नि में पका कर खरा होना चहियें। इस तरह प्रेम के सम्बन्ध में महिला उपन्यास लेखिकाओं के कुछ अनोखे और महत्वपूर्ण तथ्यों का अद्घाटन अपनी औपन्यासिक कृतियों में किया है। यह इन लेखिकाओं का अनुपम प्रदेय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उसके हिस्से की धूप–मृदुला गर्ग, नैश्नल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, प्रथम संस्करण,–1978
2. उसके हिस्से की धूप–मृदुला गर्ग,दिल्ली,–1977,पृ0 54
3. मेरे संधिपत्र–सूर्यबाला, दिल्ली–1977 पृ0 98
4. नावे–शशि प्रभा शास्त्री पृ0स0 58
5. मित्रों मरजानी–कृष्णा सोबति, दिल्ली,–1967
6. उसका घर–मेहरून्निसा परवेज–1978
7. कोरजा– मेहरून्निसा परवेज–पृ0स0 90